व्हाइट हाउस
प्रैस सचिव का कार्यालय

तुरंत प्रकाशन के लिए 1 दिसम्बर 2009

अफ़ग़ानिस्तान और पकिस्तान में आगे बढ़नेके मार्ग के बारे में
राष्ट्र के नाम
राष्ट्रपति का भाषण

आईज़न्हावर हॉल थियेटर
संयुक्त राज्य अमेरिका की वेस्ट पॉइंट सैनिक अकादमी
वेस्ट पॉइंट, न्यू योर्क

सायं 8:01 ईएसटी

राष्ट्रपति: गुड ईवनिंग. संयुक्त राज्य अमेरिका के कोर ऑव कैडेट्स, हमारी सशस्त्र सेनाओं के स्त्री-पुरुषों,और मेरे साथी अमरीकियों: आज रात मैं आपसे अफ़ग़ानिस्तान में अपने प्रयासों के बारे में बात करना चाहता हूं -- वहां हमारी वचनबद्धता की प्रकृति, हमारे हितों का दायरा,और वह रणनीति जो इस युद्ध को सफल निष्कर्ष पर पहुंचाने के लिये मेरा प्रशासन अपनाएगा. मेरे लिये यह एक असाधारण सम्मान की बात है कि मैं यह यहां वेस्ट पॉइंट पर कर रहा हूं -- जहां इतने सारे स्त्री-पुरुष हमारी सुरक्षा के लिये खड़े होने और हमारे देश में जो सर्वोत्कृष्ट है उसका प्रतिनिधित्व करने को तैयार हुए हैं.

इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान देने से पहले यह स्मरण करना महत्वपूर्ण है कि अमेरिका और हमारे मित्र देशों को अफ़ग़ानिस्तान में युद्ध करने के लिये क्यों मज़बूर होना पड़ा. हम यह लड़ाई नहीं चाहते थे. 11 सितम्बर 2001 को 19 लोगों ने चार विमानों का अपहरण किया और लगभग 3,000 लोगों की हत्या के लिए उनका इस्तेमाल किया. उन्होंने हमारे सैनिक और आर्थिक नाड़ी केन्द्रों पर हमला किया. उन्होंने निर्दोष पुरुष, स्त्री,और बच्चों की जान ले लीं उनके धर्म, जाति या स्तर की परवाह किये बग़ैर. उनमें से एक उड़ान पर सवार यात्रियों ने अगर शूरवीरता से काम न लिया होता तो वे वाशिंग्टन में लोकतंत्र के एक महान प्रतीक पर भी आघात कर सकते थे, तथा और बहुत से लोगों की हत्या कर सकते थे.

जैसा कि हम जानते हैं, ये लोग अल-क़ायदा के थे -- अतिवादियों का एक ऐसा गिरोह जिसने निर्दोष लोगों की हत्या को सही ठहराने के लिये विश्व के महान धर्मों में से एक, इस्लाम को तोड़ा-मरोड़ा है और दूषित किया है. अल-क़ायदा की कार्रवाइयों का अड्डा अफ़ग़ानिस्तान में था, जहां तालिबान ने उन्हें पनाह दे थी- एक निर्मम, दमनकारी और अतिवादी आन्दोलन जिसने ऐसे में उस देश पर क़ब्ज़ा जमा लिया था जब वर्षों के सोवियत

आधिपत्य और गृह युद्ध के बाद वह क्षत-विक्षत हो चुका था, और जब अमेरिका और हमारे मित्रों का ध्यान दूसरी ओर चला गया था.

9/11 के कुछ ही दिन बाद, अमेरिकी संसद ने अल-क़ायदा के ख़िलाफ़ और जिन्होंने उन्हें पनाह दी उनके ख़िलाफ़ शक्ति प्रयोग का अधिकार दिया -- जो अधिकार आज तक चला आ रहा है. सेनेट में इस प्रस्ताव के हक़ में शून्य के मुक़ाबले 98 वोट पड़े थे और प्रतिनिधि सदन में 1 के मुक़ाबले 420. इतिहास में पहली बार, उत्तर अतलांतिक सन्धि संगठन ने धारा 5 का आह्वान किया -- जिसमें यह वचन लिया गया है कि एक सदस्य राष्ट्र पर हमला, सभी पर हमला माना जायेगा. और संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद ने 9/11 के हमलों के जवाब में सभी आवश्यक क़दम उठाने का अनुमोदन किया था. अमेरिका, हमारे मित्र देश और विश्व अल-क़ायदा आतंकी ताने-बाने को नष्ट करने और हमारी साझी सुरक्षा की हिफ़ाज़त के लिये एक हो कर काम कर रहे थे.

इस घरेलू एकता और अंतर्राष्ट्रीय वैधता के झंडे तले – और जब तालिबान ने ओसामा बिन लादेन को हमारे हवाले करने से इंकार कर दिया केवल तभी -- हमने अपने सैनिक अफ़ग़ानिस्तान में भेजे. चन्द महीनों के भीतर अल-क़ायदा तितर-बितर हो गया और उसके बहुत से कारकुन मारे गये. तालिबान को सत्ता से हटा दिया गया और एड़ी के बल पर ख़देड़ दिया गया. वह जगह जिसने दशकों से भय देखा था अब वहां आशा की किरण दिखाई देने लगी. संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में राष्ट्रपति हामिद करज़ाई के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार स्थापित की गई. और युद्ध से क्षत-विक्षत उस देश में स्थायी शान्ति लाने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सहायता बल स्थापित किया गया.

फिर सन् 2003 के शुरू में ईराक़ में एक दूसरा युद्ध छेड़ने का निर्णय लिया गया. ईराक़ युद्ध को ले कर चली पीड़ादायक बहस को यहां दोहराने की ज़रूरत नहीं है. इतना कहना पर्याप्त है कि अगले छ: वर्ष तक हमारे सैनिकों, हमारे संसाधनों, हमारी कूटनीति, और हमारे राष्ट्रीय ध्यान का बहुत बड़ा हिस्सा ईराक़ युद्ध पर ही लगा रहा -- और ईराक़ में जाने के उस निर्णय ने अमेरिका और विश्व के काफ़ी हिस्से के बीच काफ़ी बड़ी खाई पैदा कर दी.

आज, असाधारण क़ीमतों का बोझ उठाने के बाद, हम ईराक़ युद्ध को उत्तरदायित्वपूर्ण अंत की ओर ले जा रहे हैं. हम अगली ग्रीष्म ऋतु के अंत तक अपनी लड़ाका ब्रिगेडों को ईराक़ से हटा लेंगे और सन् 2011 के अंत तक वहां से अपने सभी सैनिक हटा लेंगे. हम ऐसा कर रहे हैं इसका श्रेय हमारे वर्दीधारी स्त्री-पुरुषों के चरित्रबल को ही जाता है. (तालियां.) उनके साहस, धैर्य और लगनशीलता का ही यह परिणाम है कि हमने ईराक़ियों को अपने भविष्य का निर्माण करने का अवसर दिया है, और हम सफलतापूर्वक ईराक़ को उसके ही लोगों के के हाथों में सौंप कर लौट रहे हैं.

लेकिन जहां हमने ईराक़ में मेहनत से अर्जित मंज़िलें हासिल की हैं, वहीं अफ़ग़ानिस्तान में स्थिति बिगड़ गई है. सन् 2001 और 2002 में भाग कर सीमा पार पाकिस्तान में चले जाने के बाद, अल-क़ायदा के नेताओं ने वहां एक सुरक्षित आश्रय स्थल स्थापित कर लिया है. हांलाकि अफ़ग़ान जनता द्वारा एक वैध सरकार चुनी गई लेकिन भ्रष्टाचार, नशीली दवाओं के व्यापार, कम विकसित अर्थव्यवस्था, और अपर्याप्त सुरक्षा बलों के कारण उसे बाधाओं का सामना कर पड़ता रहा है.

पिछले कई वर्षों से तालिबान ने अल-क़ायदा के साथ साझे लक्ष्य वाला गठजोड़ कर रखा है. क्योंकि वे दोनों ही अफ़ग़ान सरकार का तख़्ता पलट देना चाहते हैं. धीरे धीरे तालिबान ने अफ़ग़ानिस्तान की भूमि के अतिरिक्त हिस्सों पर नियंत्रण जमाना शुरू कर दिया है, साथ ही वह पाकिस्तानी लोगों के ख़िलाफ़ अधिकाधिक निर्ल्ज्ज तथा विनाशकारी आतंकवादी हमले करने में भी लगा रहा है.

अब इस सारी अवधि के दौरान, अफ़ग़ानिसात में हमारे सैनिकों का स्तर, ईराक में मौजूद सैनिकों से कहीं कम रहा है. जब मैंने पद भार संभाला तो 32,000 से कुछ ही अधिक अमरीकी अफ़ग़ानिस्तान में सेवारत थे, जबकि इसकी तुलना में ईराक़ में युद्ध के शिखर के समय 160,000 सैनिक थे. अफ़ग़ानिस्तान में तालिबान के फिर सिर उठाने की समस्या से निबटने के लिये कमांडर बार बार समर्थन की मांग करते रहे ,लेकिन यह कुमक वहां नहीं पहुंची. और यही कारण है कि पदभार सम्भालने के शीघ्र बाद मैंने अधिक सैनिकों के लम्बे समय से चले आ रहे अनुरोध को स्वीकृति दे दी. अपने मित्र देशों के साथ परामर्श के बाद मैंने अफ़ग़ानिस्तान में अपने युद्ध प्रयास और पाकिस्तान में अतिवादियों के आश्रय-स्थलों के बीच बुनियादी संबंध को पहचानने वाली रणनीति का एलान किया. मैंने एक लक्ष्य रखा जो सीमित रूप में इस तरह परिभाषित किया गया कि अल-क़ायदा और इसके अतिवादी सझेदारों को विघटित, विखंडित, और परास्त करना. और मैंने अपने सैनिक तथा नागरिक प्रयासों के बेहतर समन्वय का प्रण किया.

तबसे, कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्यों के बारे में हमने प्रगति की है. अल-क़ायदा और तालिबान के उच्चस्तरीय नेता मारे गये हैं, और हमने विश्व भर में अल-क़ायदा पर दबाव बढ़ा दिया है. पाकिस्तान में, उस देश की सेना ने वर्षों में अपनी सबसे बड़ी हमलावर कार्रवाई की है. अफ़ग़ानिस्तान में, हमने और हमारे मित्रों ने तालिबान को राष्ट्रपति पद का चुनाव रोकने नहीं दिया और -- हांलाकि धोख़ाधड़ी ने उसकी चमक कम कर दी -- उस चुनाव ने एक ऐसी सरकार को जन्म दिया जो अफ़ग़ानिस्तान के क़नूनों और संविधान के अनुरूप है.

फिर भी बड़ी चुनौतियां शेष हैं. अफ़ग़ानिस्तान खो तो नहीं गया है लेकिन कई वर्षों से वह पीछे को खिसक गया है. सरकार को तख़्तापल्ट दिये जाने का कोई तात्कालिक ख़तरा तो नहीं है, लेकिन तालिबान ने गतिमयता हासिल कर ली है. अल-क़ायदा अफ़ग़ानिस्तान में उसी संख्या में पुन: उदित नहीं हुआ है जैसा 9/11 पहले था, लेकिन सीमा के सहारे उन्होंने सुरक्षित आश्रय-स्थल बनाये रखे हैं. और हमारी सेनाओं के पास उस पूर्ण समर्थन की कमी है जिसकी उन्हें अफ़ग़ान सुरक्षा बल को कारगार ढंग से प्रशिक्षण देने और उनका साझीदार बनने तथा जनसंख्या को बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के लिये ज़रुरत है. अफ़ग़ानिस्तान के हमारे नए कमांडर -- जनरल मैक्क्रिस्टल -- ने रिपोर्ट दी है की उन्होंने जितना अनुमान लगाया था सुरक्षा-स्थिति उससे ज़्यादा गंभीर है. संक्षेप में: यथास्थिति बनाये नहीं रखी जा सकती.

कैडेटों के रूप में आप ख़तरे के इस समय में स्वेच्छा से सेना में भर्ती हुए हैं. आप में से कुछ अफ़ग़ानिस्तान में लड़ाई में भाग ले चुके हैं, और कुछ वहां तैनात किये जायेंगे. आप का सर्वोच्च कमांडर होने के नाते, मेरा यह दायित्व है कि आप को ऐसा मिशन सौंपूं जो स्पष्टत: परिभाषित हो, तथा आप की सेवा के योग्य हो. और यही कारण है कि अफ़ग़ानिस्तान में मतदान पूरा होने के बाद मैंने अपनी रणनीति के व्यापक पुनर्निरीक्षण का आग्रह किया. मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मेरे सामने कभी भी ऐसा विकल्प नहीं था जिसमें सन् 2010 से पहले सैनिक तैनाती की मांग की गई हो, इसलिये उस पुनर्निरीक्षण अवधि के दौरान युद्ध संचालन के लिए

आवश्यक संसाधनों में कोई विलंब या इंकार नहीं किया गया है. इसके बजाय, पुनर्निरीक्षण ने मुझे कठिन प्रश्न पूछने और अपने राष्ट्रीय सुरक्षा दल, अफ़ग़ानिस्तान में हमारे सैनिक और नागरिक नेतृत्व, और अपने प्रमुख साझेदारों के साथ सभी विकल्पों पर ग़ौर करने का अवसर दिया है. और जो कुछ दांव पर लगा है उसे देखते हुए अमरीकी जनता और हमारे सैनिकों के प्रति मेरे दायितत्व की भी इससे कम मांग नहीं थी.

अब यह पुनर्निरीक्षण पूरा हो गया है. और सर्वोच्च कमांडर के नाते मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि अफ़ग़ानिस्तान में 30,0000 अमरीकी सैनिक भेजना हमारे अति-महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित में है. 18 महीने बाद, हमारे सैनिक घर लौटना शुरू कर देंगे. इन संसाधनों की हमें ज़रूरत है पहलशक्ति को अपने क़ब्ज़े में लेने के लिए, और साथ ही अफ़ग़ान क्षमता निर्मित करने के लिए जिससे दायित्वपूर्ण हस्तांतरण हो सके ताकि हमारी सेनाएं अफ़ग़ानिस्तान से बाहर आ सकें.

मैं बिना सोचे समझे यह निर्णय नहीं ले रहा हूं. मैंने ईराक़ में युद्ध का विरोध ठीक इसी कारण किया था कि मेरा विश्वास है कि हमें सैन्य शक्ति के उपयोग में संयम से काम लेना चाहिये, और हमेशा अपनी कार्रवाइयों में दूरगामी परिणामों के बारे में सोचना चाहिये. युद्ध में हमें उल्झे आठ वर्ष हो गये हैं, जिसकी हमने जीवन और संसाधनों के रूप में भारी क़ीमत चुकायी है. ईराक़ और आतंकवाद को लेकर वर्षों की बहस ने राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों पर हमारी एकता को छिन्न-भिन्न कर दिया है, और इस प्रयास के लिये बहुत ही ध्रुवीकृत और दलगत पृष्टभूमि खड़ी कर दी है. और महामंदी के बाद से अबतक के सबसे बुरे आर्थिक संकट को हाल ही में झेलने के बाद, अमरीका की जनता का ध्यान अपनी अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण और यहां देश में लोगों के लिये रोज़गार पैदा करने पर केन्द्रित है तो यह बात समझ में आती है.

सबसे बढ़कर, मैं जानता हूं कि यह निर्णय आपसे और भी ज़्यादा की मांग करता है -- वह सेना जो आपके परिवारों के साथ साथ सबसे भारी बोझ पहले ही उठा चुकी है. राष्ट्रपति के नाते, इन युद्धों में अपने जीवन की बलि चढ़ाने वाले हर अमरीकी के परिवार के लिये मैंने हर संवेदना-पत्र पर हस्ताक्षर किये हैं. मैंने इन युद्धों में तैनात होनेवालों के माता-पिता और पति-पत्नी के पत्र पढ़े हैं. मैं वाल्टर रीड में अपने साहसी आहत योद्धाओं से मिला हूं. मैं राष्ट्रीय ध्वज में लिपटे उन 18 अमरीकियों के ताबूतों को शीष नवाने डोवर गया जो दफ़न के लिये स्वदेश लौट रहे थे. युद्ध की त्रासद क़ीमत मैंने अपनी आंखों से देखी है. यदि मुझे ऐसा न लगता कि संयुक्त राज्य अमरीका की रक्षा और अमरीकी जनता की सुरक्षा अफ़ग़ानिस्तान में दांव पर लगी है, तो मैं बड़ी खुशी से अपने हर सैनिक को कल ही वापस स्वदेश बुला लेने का आदेश दे देता.

तो, ऐसा बिलकुल नहीं है कि मैं बिना सोचे समझे यह निर्णय ले रहा हूं. मैं यह निर्णय कर रहा हूं क्योंकि मेरा पक्का विश्वास है कि अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान में हमारी सुरक्षा दांव पर लगी हुई है. यह अल-क़ायदा द्वारा अमल में लाये जानेवाले हिंसक अतिवाद का अधिकेन्द्र है. यही वह स्थल है जहां से 9/11 को हम पर हमला किया गया, और यही वह जगह है जहां से इस समय जब मैं आप से बात कर रहा हूं नये हमलों की साज़िश रची जा रही है. यह निराधार ख़तरा नहीं है; यह काल्पनिक धमकी नहीं है. पिछले कुछ महीनों में ही हमने अपनी सीमाओं के भीतर ऐसे अतिवादियों को पकड़ा है जिन्हें आतंक के नए कृत्य करने के लिए अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान के सीमा क्षेत्र से यहां भेजा गया था. और यदि वह क्षेत्र पीछे को खिसक जाता है, और अल-क़ायदा दंड-मुक्त रूप से कार्रवाई कर पाता है तो यह ख़तरा और भी बढ़ेगा. हमें अल-क़ायदा पर

दबाव बनाये रखना ही होगा. और ऐसा करने के लिए हमें उस क्षेत्र में अपने साझेदारों के स्थायित्व और क्षमता को बढ़ाना ही होगा.

निश्चय ही, यह सारा बोझ अकेले हमें ही नहीं उठाना है. यह केवल अमरीका की ही लड़ाई नहीं है. 9/11 के बाद से अल-क़ायदा के सुरक्षित आश्रय-स्थल लंदन,अम्मान और बाली के ख़िलाफ़ हमलों के स्रोत रहे हैं. अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान दोनों के लोगों और सरकारों के लिए भी ख़तरा है. और परमाणु शक्ति-संपन्न पाकिस्तान के लिये तो और भी ज़्यादा दांव पर लगा हुआ है ,क्योंकि हम जानते हैं कि अल-क़ायदा तथा अन्य अतिवादी परमाणु हथियारों की खोज में हैं. और हमारे पास यह विश्वास करने का हर कारण मौजूद है कि वे इनका इस्तेमाल भी करेंगे.

ये तथ्य हमें अपने साथियों और मित्रों के साथ क़दम उठाने को बाध्य करते हैं. हमारा सर्वोपरि ध्येय वही है-- अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान में अल-क़ायदा को विघटित,विखंडित, और परास्त करना, और भविष्य में अमरीका और हमारे साथियों के लिये ख़तरा पैदा करने की उसकी क्षमता को रोकना. इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये हम अफ़ग़ानिस्तान में इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये काम करंगे. हमें अल-क़ायदा को सुरक्षित आश्रय-स्थल से वंचित करना होगा. हमें तालिबान की गतिमयता को पलटना होगा और उसे सरकार का तख़्ता पलटने की क्षमता से वंचित करना होगा. और हमें अफ़ग़ानिस्तान की सुरक्षा सेनाओं और सरकार की क्षमता को मज़बूत बनाना होगा, ताकि वे अफ़ग़ानिस्तान के भविष्य के लिए प्रमुख ज़िम्मेदारी निभा सकें.

हम इन लक्ष्यों को तीन तरह से प्राप्त करंगे. पहला, हम ऐसी सैन्य रणनीति का अनुसरण करेंगे जो तालिबान की गतिमयता तोड़ देगी और अगले 18 महीनों के भीतर अफ़ग़ानिस्तान की क्षमता बढ़ा देगी.

आज रात मैं जिन 30,000 अतिरिक्त सैनिकों का ऐलान कर रहा हूं वे सन् 2010 के प्रथम भाग में तैनात कर दिये जायेंगे --जो कि सबसे तीव्र संभव गति है-- ताकि वे विद्रोह को निशाना बना सकें और प्रमुख जनसँख्या केन्द्रों को सुरक्षित बना सकें. वे सक्षम अफ़ग़ान सुरक्षा सेनाओं को प्रशिक्षित करने और उनका साझीदार बनने की हमारी क्षमता में वृद्धि करेंगे ताकि और अधिक अफ़ग़ान लोग इस लड़ाई में हिस्सा ले सकें. और वे ऐसी परिस्थितियां निर्मित करेंगे कि अमरीका अफ़ग़ान लोगों को दायित्व हस्तांतरित कर सके.

क्यों कि यह एक अंतर्राष्ट्रीय प्रयास है, इस लिये मैंने यह मांग की है हमारी वचनबद्धता में हमारे मित्रों का भी योगदान शामिल हो. कुछ ने पहले ही अतिरिक्त सैनिक उपलब्ध करा दिये हैं, और हमें विश्वास है आनेवाले दिनों और सप्ताहों में और योगदान प्राप्त होंगे. हमारे मित्रों ने अफ़गानिस्तान में हमारे साथ खड़े होकर लड़ाई की है, ख़ून बहाया है और मौत को गले लगाया है. और इस युद्ध को सफलतापूर्वक समाप्त करने के लिए अब हमें एक होना होगा. क्योंकि जो दांव पर लगा है वह केवल नैटो की विश्वसनीयता की परीक्षा ही नहीं है -- जो दांव पर लगा है वह है हमारे मित्रों की सुरक्षा, और विश्व की साझी सुरक्षा.

लेकिन कुल मिलाकर ये अतिरिक्त अमरीकी और अंतर्राष्ट्रीय सैनिक हमें अफ़ग़ान सेनाओं को दायित्व हस्तांतरित करने की गति बढ़ाने का मौका देंगे, और जुलाई 2011 में अपनी सेनाओं को अफ़ग़ानिस्तान से बाहर निकालना शुरू करनेका अवसर देंगे. जैसाकि हमने ईराक़ में किया है, हम यह संक्रमण दायित्वपूर्ण ढंग से और युद्धक्षेत्र की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए करेंगे. यह सुनिश्चित करने के लिए कि अफ़ग़ानिस्तान की सुरक्षा सेनाएं

दूरगामी आधार पर सफल हों, हम उन्हें सलाह और सहायता देना जारी रखेंगे. लेकिन अफ़ग़ान सरकार – और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह कि अफ़ग़ान जनता के लिए – यह स्पष्ट होगा कि अपने देश के लिए अंतत: वे ही ज़िम्मेदार होंगे.

दूसरे, हम अपने साझेदारों, संयुक्त राष्ट्र संघ, और अफ़ग़ान जनता के साथ मिलकर एक अधिक प्रभावी नागरिक रणनीति के लिए कार्य करेंगे ताकि सरकार सुरक्षा की स्थिति में सुधार का लाभ उठा सके. यह प्रयास निष्पादन पर आधारित होगा. खुला चैक दे देने के दिन अब गुज़र चुके हैं. राष्ट्रपति करज़ाई के उद्घाटन भाषण ने नई दिशा में बढ़ने का सही संदेश भेजा. और आगे बढ़ते हुए, हम इस बारे में स्पष्टवादिता से काम लेंगे कि जो हमारी सहायता प्राप्त कर रहें हैं उनसे हमारी क्या अपेक्षाएं हैं. हम उन अफ़ग़ान मंत्रालयों, गवर्नरों, और स्थानीय नेताओं को समर्थन देंगे जो भ्रष्टाचार के लिए लड़े और जनता के लिए काम करें. हम अपेक्षा करते हैं कि जो प्रभावी नहीं है, या भ्रष्टाचारी हैं उनसे हिसाब मांगा जाय. और हम अपनी सहायता उन क्षेत्रों की ओर लक्षित स्थापित करेंगे – जैसे कि कृषि - जिनसे अफ़ग़ान लोगों के जीवन में तत्काल असर पड़े.

अफ़ग़ान लोगों ने दशकों से हिंसा झेली है. उन्हें आधिपत्य का सामना करना पड़ा है -- पहले सोवियेत संघ द्वारा, फिर विदेशी अल-क़ायदा लड़ाकुओं द्वारा जिन्होंने अफ़ग़ान भूमि का अपने उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया. तो आज रात, मैं चाहता हूं कि अफ़ग़ान लोग ये समझें कि अमरीका युद्ध और पीड़ा के दौर का अंत करना चाहता है. हमारी आपके देश पर आधिपत्य जमाने में कोई रुचि नहीं है. हम अफ़गान सरकार के इन प्रयासों का समर्थन करेंगे कि जो तालिबान हिंसा त्याग देते हैं और अपने साथी राष्ट्रिकों के मानवाधिकारों का सम्मान करते हैं उनके लिए द्वार खोल दिया जाय. और हम अफ़ग़ानिस्तान के साथ ऐसे साझेदारी चाहते जो पारस्परिक आदर पर आधारित हो – उनको अलग-थलग किया जाय जो नष्ट करते हैं; उनको मज़बूत बनाया जाय जो निर्माण करते हैं; वह दिन जल्दी लाने का प्रयास किया जाय जब हमारे सैनिक वहां से रवाना हो जाएँ; और ऐसी स्थायी मैत्री निर्मित की जाय जिसमे अमरीका आपका साझीदार हो, और कभी भी आपका संरक्षण-दाता न हो.

तीसरे, हम पूरी तरह यह पहचानते हुए कार्य करेंगे कि अफ़ग़ानिस्तान में हमारी सफ़लता अटूट रूप में पाकिस्तान के साथ हमारी साझेदारी से जुड़ी हुई है.

हम अफ़ग़ानिस्तान में इसलिये हैं ताकि एक कैंसर को उस पूरे देश में एक बार फिर फैल जाने से रोकें. लेकिन उसी कैंसर ने पाकिस्तान के सीमा क्षेत्र में भी जड़ जमा ली है. इसलिये हमें ऐसी रणनीति की ज़रूरत है जो सीमा के दोनों ओर काम दे.

अतीत में, पाकिस्तान में ऐसे लोग रहे हैं जिन की दलील थी कि अतिवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष उनकी लड़ाई नहीं है, और कि पाकिस्तान के लिए बेहतर यह है कि जो लोग हिंसा का इस्तेमाल करते हैं उनके ख़िलाफ़ ख़ास कुछ न किया जाय या उन के साथ मेल-मिलाप कर लिया जाय. लेकिन हाल के वर्षों में, जब कराची से इस्लामाबाद तक निर्दोष लोग मार डाले गये हैं, यह स्पष्ट हो गया है कि वे पाकिस्तानी लोग हैं जिनके लिए अतिवाद से सब से बड़ा ख़तरा है. जनता की राय बदल गयी है. पाकिस्तानी सेना ने स्वात और दक्षिण वज़ीरिस्तान में आक्रामक कार्रवाई की है. और इसमें कोई संदेह नहीं है कि अमरीका औए पाकिस्तान का साझा दुश्मन है.

अतीत में, हमने बहुत बार पाकिस्तान के साथ अपने संबन्ध को संकीर्णरूप में परिभाषित किया है. वे दिन अब चले गये हैं. आगे बढ़ते हुए, हम पाकिस्तान के साथ ऐसे साझेदारी के प्रति वचनबद्ध हैं जो पारस्परिक हित, पारस्परिक सम्मान, पारस्परिक विश्वास की बुनियाद पर निर्मित हो. हम उन दलों को निशाना बनाने की पाकिस्तान की क्षमता को मज़बूत बनाएंगे जो हमारे देशों के लिए ख़तरा पैदा करते हैं, और हमने यह स्पष्ट कर दिया है कि हम उन आतंकवादियों के लिए सुरक्षित आश्रय-स्थल बर्दाश्त नहीं कर सकते जिनका ठिकाना ज्ञात है और जिनके इरादे स्पष्ट हैं. अमेरिका पाकिस्तान के लोकतंत्र और विकास को समर्थन देनेके लिए ठोस संसाधन भी उपलब्ध करा रहा है. हम उन पाकिस्तानियों के सबसे बड़े अंतर्राष्ट्रीय समर्थक हैं जो लडाई के कारण विस्थापित हो गये हैं. और आगे बढ़ते हुए, पाकिस्तान की जनता को यह ज्ञात होना चाहिये की जब बंदूकें ख़ामोश हो जायेंगी, उसके बहुत बाद भी अमरीका पाकिस्तान की सुरक्षा और ख़ुशहाली का सशक्त समर्थक बना रहेगा, ताकि उसके लोगों की महती क्षमताओं को खुलकर पनपने का मौका मिले.

हमारी रणनीति के ये तीन प्रमुख तत्व हैं - संक्रमण के लिए परिस्थितियां निर्मित करने हेतु सैनिक प्रयास; ऐसा नागरिक उछाल जो सकारात्मक कार्रवाई को बल प्रदान करे; और पाकिस्तान के साथ एक कारगर साझेदारी.

मैं जानता हूं कि हमारे इस नज़रिये के बारे में कई चिंताएं हैं. तो मैंने जो कुछ प्रमुख दलीलें सुनी हैं, और जिन्हें मैं गंभीरता से ले रहा हूं, मैं संक्षेप में उनके बारे में कुछ कहना चाहता हूं.

प्रथम, ऐसे लोग हैं जिन्होंने कहा है कि अफ़ग़ानिस्तान एक और वियतनाम है. उनकी दलील है कि उसे स्थिरता प्रदान नहीं की जा सकती, और हमारे लिए बहेतर यह होगा कि हम और नुकसान उठाना बंद करें और शीघ्रता से वहां से वापस आ जाएं. मेरा विश्वास है कि यह दलील इतिहास को ग़लत ढंग से पढ़ने पर आधारित है. वियतनाम के विपरीत, 43 राष्ट्रों का व्यापक गठजोड हमारे साथ है जो हमारी कार्रवाई की वैधता को पहचानता है. वियतनाम के विपरीत, हम व्यापक आधार वाले लोकप्रिय विद्रोह का सामना नहीं कर रहे हैं. और सबसे महत्वपूर्ण यह कि, वियतनाम के विपरीत, अमरीकी लोगों पर अफ़ग़निस्तान से अनैतिक हमला किया गया, और वे उन्हीं अतिवादियों का निशाना बने हुए हैं जो उसकी सीमा के सहारे अब भी साज़िश रच रहे हैं. अब उस क्षेत्र को छोड़ देने -- और अल-क़ायदा के ख़िलाफ़ दूर से प्रयासों पर निर्भर करने से -- अल-क़ायदा पर दबाव बनाये रखने की हमारी क्षमता में ठोस व्यवधान पड़ेगा, और हमारी गृहभूमि और हमारे मित्रों पर अतिरिक्त हमलों का अस्वीकार्य जोखिम पैदा हो जायेगा.

दूसरे, वे लोग हैं जो मानते हैं कि हम अफ़ग़ानिस्तान को उसकी मौजूदा हालत में नहीं छोड़ सकते, लेकिन उनका सुझाव है कि उन्हीं सैनिकों के साथ आगे बढ़े जो पहले ही वहां मौजूद हैं. लेकिन इससे केवल यथास्थिति ही बनी रहेगी जिसमें हम हाथ पांव मारते रहेंगे, और वहां परिस्थितियों को धीरे धीरे बिगड़ जाने का मौका मिलेगा. यह अंतत: अधिक खर्चीला साबित होगा और इससे अफ़ग़ानिस्तान में हमारे मौजूदगी और लंबी खिंचेगी, क्योंकि हम कभी भी वे परिस्थितियां पैदा नहीं कर पायेंगे जो अफ़ग़ान सुरक्षा बलों को प्रशिक्षण देने और उन्हें दायित्व संभालने की जगह देने के लिए ज़रूरी हैं.

अंतत:, वे लोग हैं जो दायित्व अफ़ग़ान लोगों को हस्तांतरित करने की समय-रेखा बताए जाने का विरोध करते हैं. वास्त्व में कुछ लोग अधिक नाटकीय तथा सीमा-रहित युद्ध प्रयास की मांग करते हैं, ऐसा प्रयास जो एक

दशक तक राष्ट्र-निर्माण परियोजना के प्रति हमें वचनबद्ध कर दे. मैं इस मार्ग को इसलिये अस्वीकार करता हूं क्योंकि यह ऐसे लक्ष्य निर्धारित करता है जो वाजिब क़ीमत पर प्राप्ति से परे हैं, और अपने हितों की सुरक्षा के लिए जितनी हमें ज़रूरत है उससे अधिक हैं. इसके अतिरिक्त, संक्रमण के लिए सीमा-रेखा की अनुपस्थिति अफ़ग़ान सरकार के साथ काम करने में शीघ्रता की भावना से हमें वंचित कर देगी. यह स्पष्ट होना चाहिये की अपनी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अफ़ग़ान लोगों को ही लेनी होगी, और कि अमरीका की अफ़ग़ानिस्तान में एक अंतहीन लड़ाई लड़ने में कोई रुचि नहीं है.

राष्ट्रपति के नाते, मैं ऐसे लक्ष्य तय करने से इंकार करता हूं जो हमारे दायित्व, हमारे संसाधनों, या हमारे हितों से परे तक जाते हों. और मुझे उन सभी चुनौतियों को तोलना है जो हमारे देश के सामने है. मेरे पास केवल एक ही चुनौति के प्रति वचनबद्ध हो जाने का सुख-अवसर मौजूद नहीं है. वास्तव में मुझे राष्ट्रपति आइज़न्हावर के शब्द याद हैं जिन्हों ने हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा की बात करते हुए कहा था “हर प्रस्ताव को इस व्यापक विचार की रोशनी में तोला जाना चाहिये: हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रमों में संतुलन बनाये रखने की आवश्यकता”.

पिछले कई वर्षों में हमने वह संतुलन खो दिया है, हम अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और अपनी अर्थव्यवस्था के बीच के संबंध को आंकने में नाकाम रहे हैं. आर्थिक संकट के परिणाम में, हमारे बहुत से पड़ोसी और मित्र रोजगार खो बैठे हैं और अपने बिल चुकाना उनके लिए एक संघर्ष बन गया है. बहुत से अमरीकी हमारे बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित हैं. इस बीच, विश्वव्यापी अर्थ व्यवस्था के भीतर प्रतिस्पर्धा और अधिक तीव्र हो गई है. इसलिये हम इन युद्धों के खर्च की अनदेखी करते नहीं रह सकते.

कुल मिला कर जब तक मैंने पदभार संभाला ईराक़ और अफ़ग़ानिस्तान के युद्धों का खर्च एक ट्रिलियन डॉलर के क़रीब पहुंच चुका था. आगे बढ़ते हुए, मैं इन खर्चों पर खुले रूप में और इमानदारी के साथ ग़ौर करने के प्रति वचनबद्ध हूं. और अफ़ग़ानिस्तान में हमारा यह नया नज़रिया इस वर्ष सेना पर लगभग 30 बिलियन डॉलर का खर्च बैठने का अनुमान है, और ऐसे में जबकि हम अपने बजट घाटे को कम करने का प्रयास करेंगे, मैं इन खर्चों पर संसद के साथ निकट से कार्य करूंगा.

लेकिन जैसे हम ईराक़ में युद्ध का अंत करते हैं और अफ़ग़ान लोगों को दायित्व हस्तांतरित करने की ओर बढ़ते हैं, हमें यहां स्वदेश में अपनी शक्ति का पुनर्निमाण करना होगा. हमारी ख़ुशहाली हमारी शक्ति का आधार उपलब्ध कराती है. यह हमारी सेना का खर्च जुटाती है. हमारी कूटनीति की लागत की ज़िम्मेदारी लेती है. यह हमारे लोगों की क्षमता को बाहर लाती है और नए उद्योग में पूंजीनिवेश का मौका देती है. और यह हमें इस शताब्दी में भी उसकी सफलता के साथ प्रतिस्पर्धा का मौका देती है जैसा हमने पिछली शताब्दी में किया था. यही कारण है की अफ़ग़ानिस्तान में सैनिकों की वचनबद्धता सीमा-रहित नहीं हो सकती -- क्योंकि जिस देश के निर्माण में मेरी सबसे ज़्यादा रुचि है, वह स्वयं हमारा देश है.

अब, मैं यह साफ़ कर देना चाहता हूं कि इसमें से कुछ भी आसान नहीं होगा. हिंसक अतिवाद के विरुद्ध संघर्ष जल्दी समाप्त नहीं होगा, और यह अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान से कहीं आगे तक फ़ैला हुआ है. यह हमारे स्वतंत्र समाज, और विश्व में हमारे नेतृत्व की स्थायी परीक्षा होगी. और महाशक्तियों के संघर्ष और विभाजन की स्पष्ट रेखाओं के विपरीत जिन्होंने 20 वीं शताब्दी को परिभाषित किया था, हमारे प्रयास का संबंध अव्यवस्थित क्षेत्रों, असफल देशों, और बिखरे दुश्मनों से होगा.

लिहाज़ा परिणामस्वरूप, अमरीका को अपनी शक्ति ऐसे तरीके से दिखानी होगी कि हम युद्धों का अंत करें और संघर्ष होने से रोकें -- केवल ऐसे नहीं कि हम युद्ध कैसे करते हैं. अपनी सैनिक शक्ति के इस्तेमाल में हमें फुर्तीला और यथातथ्य होना होगा. अल-क़ायदा और उनके साथी जहां कहीं भी पैर जमाने की कोशिश करें -- चाहे सोमालिया या यमन में या कहीं और -- अधिकाधिक दबाव और सशक्त साझेदारियों के साथ उनका मुक़ाबला किया जाना होगा.

और हम केवल सैनिक शक्ति पर ही भरोसा नहीं कर सकते. हमें अपनी गृहभूमि की सुरक्षा में भी निवेश करना होगा क्योंकि हम विदेश में हर हिंसक अतिवादी को पकड़ या मार नहीं सकते. हमें अपनी गुप्तचरी में सुधार औए बहेतर समन्वय लाना होगा ताकि हम कृत्रिम मुखौटे वाले ताने-बानों से हमेशा एक क़दम आगे रहें.

हमें व्यापक तबाही के औज़ार छीन लेने होंगे. यही कारण है कि मैंने खुली परमाणु सामग्री को आतंकवादियों से सुरक्षित रखने, परमाणु अस्त्रों का प्रसार रोकने और उन अस्त्रों से रहित विश्व के लक्ष्य को पाने का प्रयास करने को अपनी विदेशनीति का एक केन्द्रीय स्तम्भ बनाया है -- क्यों कि हर देश को यह समझना होगा कि सच्ची सुरक्षा अधिकाधिक विनाशकारी हथियारों की अंतहीन दौड़ से कभी नहीं आयेगी; सच्ची सुरक्षा उनके लिए आयेगी जो उन्हें अस्वीकार करेंगे.

हमें कूटनीति का उपयोग करना होगा, क्योंकि कोई भी एक देश परस्पर जुड़े हुए विश्व की चुनौतियों से अकेले काम करते हुए नहीं निबट सकता. मैंने यह वर्ष अपने सन्धि-संगठनों के नवीनीकरण और नई साझेदारियां निर्मित करने में बिताया है. और हमने अमरीका तथा मुस्लिम विश्व के बीच एक नई शुरूआत निर्मित की है -- ऐसी जो संघर्ष का चक्र तोड़ने में हमारे पारस्परिक हित को मान्यता देती है, और ऐसे भविष्य का वचन देती है जिसमें वे लोग जो निर्दोषों की हत्या करते हैं उन लोगों द्वारा अलग-थलग किये जायेंगे जो शांति, ख़ुशहाली और मानव सम्मान के लिये खड़े होते हैं.

और अंतत: हमें अपने मूल्यों की शक्ति का सहारा लेना होगा -- क्यों कि हमारे सामने जो चुनौतियां हैं वे चाहे बदल गई हों, लेकिन हम जिन चीज़ों में विश्वास करते हैं वे नहीं बदलनी चाहिये. इसलिये हमें अपने मूल्यों को अपने घर में उनका पालन करके बढ़ावा देना चाहिए -- यही कारण है कि मैंने यातना देने की मनाही कर दी है और ग्वांटनामो में बंदीगृह हम बंद कर देंगे. और हमें विश्व भर में हर उस स्त्री, पुरुष, और बच्चे को यह स्पष्ट कर देना चाहिये जो निरंकुश शासन के काले बादल के तले रहता है कि अमेरिका उनके मानवाधिकारों की हिमायत में खुलकर बोलेगा, और स्वतंत्रता, न्याय, अवसर, और सभी लोगों की मान-मर्यादा के प्रति सम्मान की ज्योति का रखवाला बना रहेगा. हम ऐसे लोग हैं. यह है अमेरिका के अधिकार का स्रोत, नैतिक स्रोत.

फ़्रेंक्लिन रोज़ावेल्ट के दिनों से लेकर, औए हमारे दादा-दादी और पड़दादा-पड़दादी की सेवा और बलिदानों के ज़रिये, हमारे देश ने विश्वव्यापी मामलों में एक विशेष बोझ उठाया है. हमने कई महाद्वीपों पर स्थित अनेक देशों में अमरीकी ख़ून बहाया है. हमने दूसरे देशों की मदद के लिए अपना राजस्व खर्च किया है ताकि वे मलबे में से पुनर्निमाण कर सकें और अपनी अर्थव्यवस्थाओं का विकास कर सकें. हमने औरों के साथ मिलकर ऐसे संस्थानों का ढ़ांचा विकसित किया है -- संयुक्त राष्ट्रसंघ से लेकर नैटो और विश्वबैंक तक -- जो मानव जाति की साझा सुरक्षा और ख़ुशहाली के लिये साधन उपलब्ध कराते हैं.

इन प्रयासों के लिये हमें हमेशा ही धन्यवाद नहीं दिया गया है, और कभी कभी हमने ग़लतियां भी की हैं. लेकिन किसी भी अन्य देश से अधिक संयुक्त राज्य अमरीका ने छ: दशकों से अधिक समय से विश्वव्यापी सुरक्षा का दायित्व उठाया है -- ऐसा समय जिसने, सारी समस्याओं के बावजूद, दीवारों को गिरते देखा है, मंडियां खुलते देखा है, और करोड़ों को ग़रीबी की गर्त से उबरते, अतुलनीय वैज्ञनिक प्रगति, और मानव स्वतंत्रता की आगे बढ़ती सीमाएं देखी हैं.

क्योंकि पुरानी महा शक्तियों के विपरीत, हमने विश्व पर प्रभुत्व जमाने की चाह नहीं रखी. हमारे इस संघ का निर्माण दमन के प्रति विरोध के आधार पर हुआ. हम अन्य राष्ट्रों पर आधिपत्य जमाना नहीं चाहते. हम किसी अन्य देश के संसाधनों पर दावा नहीं करते या अन्य लोगों को इस लिए लक्ष्य नहीं बनाते कि उनका धर्म या जाति हमसे भिन्न है. हम जिसके लिये लड़े हैं -- और जिसके लिये लड़ना जारी रखे हैं -- वह है हमारे बच्चों और पोतों -पोतियों के लिये बेहतर भविष्य. और हमारा विश्वास है कि उनका भविष्य बहेतर होगा, यदि और लोगों के बच्चे और पोते-पोतियां स्वतंत्रता में रह सकें और अवसरों तक उनकी पहुंच हो. (तालियां)

एक देश के नाते हम उतने युवा नहीं हैं, और शायद उतने अबोध भी नहीं, जितने हम उस समय थे जब रोज़वेल्ट देश के राष्ट्रपति थे. लेकिन फिर भी हम स्वतंत्रता के लिए एक उदात्त संघर्ष के वारिस हैं . और अब हमें एक नये युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी सारी शक्ति और नैतिक बल का आह्वान करना होगा.

अंत में, हमारी सुरक्षा और नेतृत्व केवल हमारे हथियारों की शक्ति से ही पैदा नहीं होता. यह जन्म लेता है हमारे लोगों से -- उन कर्मिकों और व्यापारियोंसे जो हमारी अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण करेंगे; उन निवेशकों और अनुसंधानकर्ताओं से जो आगे बढ़कर नए उद्योग लगायेंगे; उन अध्यापकों से जो हमारे बच्चों को शिक्षा देंगे, और उन लोगों की सेवाओं से जो देश में हमारे समुदायों में काम करते हैं; उन कूटनीतिज्ञों और पीस कोर स्वयं-सेवियों से जो विदेशों में आशा का दीप जलाते हैं; और वर्दीधारी उन सभी स्त्री-पुरुषों से जो बलिदान की उस अटूटी रेखा का हिस्सा हैं जिसने जनता की, जनता द्वारा, और जनता के लिए सरकार को इस धरा पर एक वास्तविकता बनाया है. (तालियां)

यह विशाल और विविध नागरिक समुदाय हर प्रश्न पर हमेशा सहमत नहीं होगा -- और हमें होना भी नहीं चाहिये. लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि एक देश के नाते हम अपने नेतृत्व को बनाये नहीं रख सकते, न ही अपने समय की महान चुनौतियों से पार पा सकते हैं यदि हम उसी विद्वेष और दोष-दर्शिता और पक्षपात से स्वयं को टुकड़े टुकड़े हो जाने देते हैं जिसने हाल के समय में हमारे राष्ट्रीय वार्तालाप में विष घोला है.

यह भूल जाना आसान है कि जब यह युद्ध शुरू हुआ था तब हम संगठित थे – एक भयानक हमले की ताज़ा स्मृति से और अपनी गृहभूमि और जिन मूल्यों से हमें प्यार है उनकी रक्षा के दृढ संकल्प से जुड़े हुए. मैं इस धारणा को मानने से इंकार करता हूं कि हम ऐसी एकता का फिर से आह्वान नहीं कर सकते. (तालियां)

मेरे शरीर का रोम रोम इस विश्वास से ओतप्रोत है कि हम – अमरीकियों के रूप में - एक साझे उद्देश्य के लिये फिर एक हो सकते हैं. क्योंकि हमारे मूल्य किसी चर्म-पत्र पर लिखे केवल शब्द नहीं है, ये एक आस्था हैं जो हमें एक साथ पुकारते हैं, और जो हमें सब काले तूफ़ानों में से भी एक राष्ट्र और एक जनता के रूप में उबारकर ले आये हैं.

अमेरिका – हम एक महान परीक्षा के दौर से गुज़र रहे हैं. और इन तूफ़ानों के बीच हम जो संदेश भेजते हैं वह स्पष्ट होना चाहिये: कि हमारा उद्देश्य न्यायोचित है और हमार संकल्प अडिग. हम इस विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे कि जो सही है शक्ति उसी से जन्म लेती है, और इस प्रण के साथ कि ऐसे अमेरिका का निर्माण करेंगे जो अधिक सुरक्षित हो, ऐसा विश्व जो अधिक सुरक्षित हो, और ऐसा भविष्य जो सबसे गहरे भय का नहीं बल्कि सबसे ऊंची आशा का प्रतिनिधित्व करता हो. (तालियां)

धन्यवाद. आप पर ईश्वर की अनुकम्पा हो. संयुक्त राज्य अमरीका पर ईश्वर की अनुकम्पा हो. (तालियां)
बहुत धन्यवाद. धन्यवाद. (तालियां)

समाप्त सायं 8:35 ईएसटी